## संचालन समिति

संरक्षक : **प्रो. इन्द्रवर्धन त्रिवेदी**
कुलपति, मो. ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
**श्री रियाज़ तहसीन**
अध्यक्ष, विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर

आयोजन अध्यक्ष : **डॉ. टी.पी. शर्मा**
निदेशक, वि.बी.आर.आई.

सेमीनार समन्वयक : **डॉ मनोज राजगुरु**
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
Mob. 094146-85630, 8946956595

Email icssrseminar.polscience@gmail.com
rajguru_manoj1@rediffmail.com

## आयोजन समिति

| | |
|---|---|
| डॉ. सबा खान | डॉ. अर्चना जैन |
| डॉ. अनिता जैन | डॉ. शैल सिंह सौलंकी |
| डॉ. सुषमा जैन | डॉ. श्रीराम आर्य |
| डॉ. अनुश्री शर्मा | डॉ. सरस्वती जोशी |
| डॉ.दक्षा शर्मा | डॉ. विकास बया |
| श्री सोनेश भाटिया | डॉ. समीर व्यास |
| श्री लक्ष्मण सिंह राजपूत | डॉ. कंचन पानेरी |
| श्रीमति चेष्टा शर्मा | श्री रतन लाल सुथार |
| सुश्री मोनिका जैन | सुश्री नंदिनी सिंह |

## सलाहकार मण्डल

प्रो. संजय लोढ़ा, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, मो. ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
प्रो. अरुण चतुर्वेदी, पूर्व डीन, सा. वि. एवं मा. महाविद्यालय, मो. ला. सु.विश्वविद्यालय, उदयपुर
प्रो. फरीदा शाह, अधिष्ठाता, सा वि. एवं मा. महाविद्यालय, मो. ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
प्रो. मीना गौड़, अध्यक्ष, मानविकी संकाय, मो. ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
प्रो. दिव्यप्रभा नागर, निदेशक,जी एस. टी टी महाविद्यालय, उदयपुर
प्रो. सी. आर. सुथार, लोक प्रशासन विभाग, मो. ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
प्रो. सुरेन्द्र कटारिया, लोक प्रशासन विभाग, मो. ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
प्रो. सी. आर. सुथार , लोक प्रशासन विभाग, मो. ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
डॉ. जी. एस. कुम्पावत, राजनीति विज्ञान विभाग, मो. ला. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर
डॉ. आर. के. गर्ग, सलाहकार, विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर
डॉ. वेददान सुधीर, स्थानीय स्वशासन एवं उत्तरदायी नागरिकता संस्थान, उदयपुर
डॉ. आर. एल. श्रीमाल, संयोजक, विद्या भवन प्रकृति साधना केन्द्र, उदयपुर
डॉ.एम.पी.शर्मा, विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर
डॉ. प्रेम सिंह रावलोत, प्राचार्य, बी. एन. कन्या महाविद्यालय, सलूम्बर
श्री एस. पी.गौड़, सचिव, विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर

## विद्याभवन रूरल इन्स्टीट्युट, उदयपुर

विद्या भवन सोसायटी ( 1931 ) द्वारा 1956 में विद्या भवन रूरल इन्स्टीट्युट स्थापित किया गया, जो अपनी स्थापना से वर्तमान तक समतामूलक और उत्तरदायित्व नागरिक निर्माण के उद्देश्य से कार्यरत है। झीलों के शहर उदयपुर, जो वर्तमान में शिक्षा के वृहद् केन्द्र के रूप में उभर रहा है, में विद्या भवन रूरल इंस्टीट्यूट स्नातकोत्तर महाविद्यालय विज्ञान, कला, वाणिज्य सभी संकायों में पिछले छः दशकों से अध्ययन-अध्यापन का कार्य कर रहा है साथ ही इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अध्ययन केन्द्र के रूप में भी कई पाठयक्रमों के माध्यम से अभ्यर्थियों को लाभान्वित कर रहा है। इसे राज्य सरकार द्वारा पहले मॉडल कॉलेज के रूप में भी मान्यता दी गई है। यह महाविद्यालय आधुनिक सुविधाओं के साथ, अपने योग्य, अनुभवी और कर्मठ संकाय सदस्यों के सहयोग से दक्षिण राजस्थान में विशेष कर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में उच्च शिक्षा के प्रसार को लेकर प्रतिबद्ध है। अपनी उपलब्धियों और उत्कृष्टता के आधार पर ही यह संस्थान हाल ही में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् के द्वारा बी- श्रेणी का दर्जा पा चुका है।

## उदयपुर

अरावली की सुरम्य पहाड़ियों में 1559 ई. में स्थापित उदयपुर शहर 'झीलों की नगरी' के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखते हुए ही इस शहर को राजस्थान का काश्मीर भी कहा जाता है। भारत के इतिहास में उदयपुर का अपना एक विशिष्ट गौरवमयी स्थान है। यहाँ की सभ्यता, संस्कृति, पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है।

## मौसम एवं दूरी

सेमीनार के दौरान उदयपुर शहर में शीत ऋतु का अंतिम समय रहेगा, अतः सभी प्रतिभागी ऊनी वस्त्र साथ लेकर आयें। सेमीनार स्थल रेल्वे स्टेशन से 9 किमी, बस स्टेशन से 8 किमी और डबोक एयरपोर्ट से 22 किमी दूर है।

# भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रायोजित

# राष्ट्रीय सेमीनार

# तृणमूल स्तर पर विकास : मुद्दे और चुनौतियाँ

**27 - 28 फरवरी, 2015**

**आयोजक**


**राजनीति विज्ञान विभाग**
**विद्या भवन रूरल इन्स्टीट्युट**
बड़गाँव , उदयपुर
NAAC द्वारा 'B' ग्रेड प्रत्यायित संस्थान
फोन :- 0294 - 2453088, फैक्स : 0294-2450403
Website : www.vbriudaipur.org

Email- vbriudr@yahoo.com

## तृणमूल स्तर पर विकास : मुद्दे और चुनौतियाँ (Development at Grassroot Level : Issues and Challenges)

किसी भी राज्य में शासन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वहाँ शासन में जन भागीदारी की प्रकृति और स्वरूप किस प्रकार का है। शासन की संरचनाएँ किस प्रकार की हैं, शासन की शक्तियाँ केन्द्रित हैं या विकेन्द्रित। यह तर्क भी सर्वमान्य है कि शासन को यदि तृणमूल स्तर से ही संचालित कर मजबूत किया जाये तो वह न केवल प्रभावी और उपयोगी होगा वरन् ऐसे शासन के द्वारा विकास के नए आयाम भी स्थापित होंगे। हमारे देश में इसी सोच के मद्देनज़र तृणमूल स्तर पर जनभागीदारी को बढ़ाने के लिए एवं जन भागीदारी द्वारा जमीनी स्तर से ही विकास की रूपरेखा को अमलीजामा पहनाने के उद्देश्य से स्थानीय शासन को सांवैधानिक रूप से मान्यता दी गई है। 73 वें और 74 वें संविधान संशोधन द्वारा लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को प्रभावी बनाते हुए ग्रामीण स्तर पर पंचायतीराज और शहरी स्तर पर नगरीय निकाय की संस्थाओं की व्यवस्था की गई है। सांवैधानिक संस्थाओं के रूप में कार्य करते हुए अब इन्हें दो दशक हो चुके हैं। इन दो दशकों में पूर्व के अनुभवों के आधार पर ये संस्थाएँ कितने कारगर तरीके से कार्य कर पाई हैं ? राजनीतिक, सामजिक, आर्थिक आदि क्षेत्रों में ये संस्थाएँ कहाँ तक उत्तरदायी रही हैं ? इन संस्थाओं के क्रियान्वयन में कौन से मुद्दे उभरे हैं तथा उन मुद्दों की स्वीकार्यता और उपयोगिता कितनी है ? उन मुद्दों में से कितने मुद्दे आंदोलनात्मक रूप में उभरे हैं ? ये सभी विषय मंथन के लिए उपयुक्त प्रतीत होते हैं। साथ ही यह तथ्य भी विचारणीय है कि इन तृणमूल स्तर की संस्थाओं के संचालन से और इन तृणमूल स्तर की संस्थाओं के संचालन में कौन सी चुनौतियाँ उभरी हैं, जो इनकी पूर्ण सफलता को बाधित कर रही हैं। इन्हीं कुछ प्रश्नों को मद्देनज़र रखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि जन भागीदारी और विकास की समझ रखने वाले विद्वज्जन के ज्ञान और अनुभवों के द्वारा इन मुद्दों पर पर्याप्त चिंतन और मनन किया जाये ताकि तृणमूल स्तर के विकास का सही मूल्यांकन कर पाने में सहायता मिल सके। साथ ही उन तथ्यों को भी उजागर किया जा सकें, जो तृणमूल स्तर के विकास में उभरी चुनौतियों के समाधान में सहायक हो। इन्हीं सन्दर्भों के आधार पर यह राष्ट्रीय स्तर की सेमीनार आयोजित की जा रही है।

## उप-विषय ( Sub-Theme )

- लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और तृणमूल स्तर पर विकास
- स्थानीय शासन : प्रशासनिक और वित्तीय सन्दर्भ
- स्थानीय शासन में उभरती नेतृत्व की प्रकृति
- वंचित वर्ग का विकास और जमीनी प्रयास
- गैर सरकारी संगठन और स्थानीय विकास

## सार-संक्षेप और शोध-पत्र ( Abstract and Research Paper )

इस राष्ट्रीय सेमीनार के आयोजक इच्छुक संभागियों से उल्लिखित विषयों पर अपने प्रस्तुतीकरण का सार-संक्षेप एवं पूरा पत्र आमंत्रित करते हैं। यदि कोई प्रतिभागी सेमीनार के मूल विषय से संबंधित किसी नवीन उपयोगी विषय पर अपना प्रस्तुतीकरण देना चाहे तो उसका भी स्वागत है। सभी प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे अपने लेख का सार संक्षेप अधिकतम 350 शब्दों में ( उप-विषय सहित ) 1 फ़रवरी, 2015 तक तथा पूरा लेख अधिकतम 5000 शब्दों में 15 फ़रवरी, 2015 तक नीचे दिए गये ई-मेल पर भेज दें। कृपया ध्यान रहे कि आपका पत्र A 4 पेज पर ( हिंदी में kruti dev 010, font 14 ; अंग्रेजी में Times New Roman, Font 10 ) टाइप्ड हो। प्रतिभागी अपने सार-संक्षेप एवं लेख की हार्ड कॉपी डाक द्वारा भी प्रेषित करें। प्राप्त पत्रों में से श्रेष्ठ पत्रों का चयन प्रस्तुतिकरण के लिए किया जायेगा।

icssrseminar.polscience@gmail.com

## आवास सुविधा ( Accommodation )

उदयपुर से बाहर के सभी प्रतिभागियों के लिये आवास की सुविधा पूर्व प्रदान की गई सूचना के आधार पर की जाएगी। अतः इस सम्बन्ध में समय पर आयोजकों को सूचित कर सहयोग प्रदान करें। प्रतिभागी के साथ आने वाले सदस्य का व्यय स्वयं प्रतिभागी को वहन करना होगा।

## पंजीयन शुल्क ( Registration fees )

| क्र. सं. | श्रेणी (Category) | ( Registration Fees ) | |
|---|---|---|---|
| | | 15 फरवरी 2015 तक | तत्काल (on spot) |
| 1 | शिक्षक / एन. जी.ओ. प्रतिनिधि / अन्य प्रतिभागी | 500 | 700 |
| 2 | शोधार्थी | 400 | 500 |

पंजीयन शुल्क नकद अथवा डिमांड ड्राफ्ट द्वारा स्वीकृत किये जाएँगे। डिमांड ड्राफ्ट 'निदेशक, विद्या भवन रूरल इन्स्टीट्युट उदयपुर' (Director, Vidya Bhawan Rural Institute, Udaipur). के नाम से ही भेजें। ड्राफ्ट के पीछे प्रतिभागी अपना नाम अवश्य लिखें साथ ही ड्राफ्ट के साथ पंजीयन पत्र ( Registration Form ) भी पूरी तरह से भरकर संलग्न करें। पंजीयन पत्र संस्थान की वेबसाईट www.vbriudaipur.org से भी डाउनलोड कर सकते हैं।